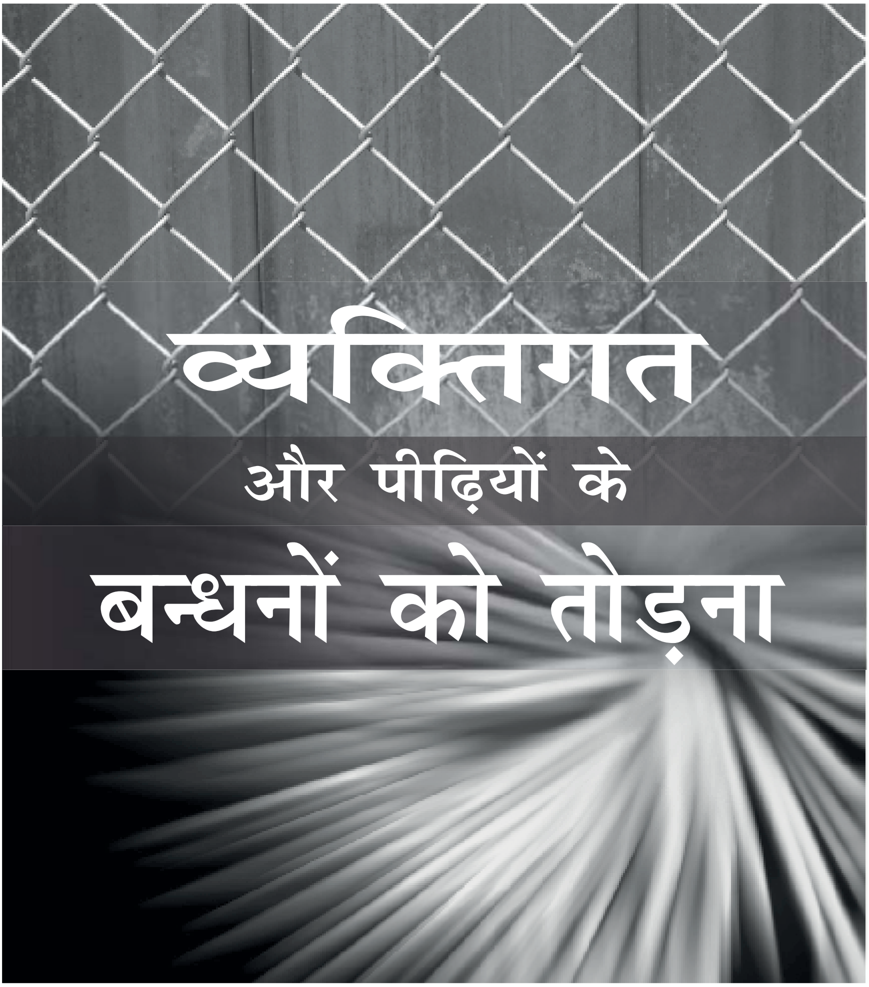

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण सितंबर 2012

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Breaking Personal and Generational Bondages)

व्यक्तिगत
और पीढ़ियों के
बन्धनों को तोड़ना

विषय सूची

परिचय 1

1. पीढ़ियों का बन्धन क्या है? 5

2. अधार्मिकता और पाप 12

3. पारिवारिक बन्धन कैसे आते है? 16

4. व्यक्तिगत और पारिवारिक बन्धनों को पहचानना 22

5. हम इससे कैसे स्वतन्त्र हसे सकते है? 24

प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न 31

तैयारी 39

प्रार्थना 40

परिचय

कुछ समस्याएं जिनका लोग सामना कर रहे हैं उनकी उत्पत्ति पिछली पीढ़ियों में हो सकती है। इनमें से कुछ समस्याएं_किसी के कारण हो सकती हैं जिसने पिछली पीढ़ी में पापमय जीवन जीया हो अथवा दुष्टात्माओं के कामों में लगा रहा हो। उदाहरण के लिए, एक परिवार में दादा ने दिवालियापन का अनुभव किया हो और यह उनके एक बेटे के ऊपर आ गया हो। इस पुत्र के बच्चे हों और उनके बच्चे भी दिवालिया बन गए हों। पीढ़ी दर पीढ़ी एक अथवा कई लोग इस समस्या से प्रभावित हुए हों।

एक और उदाहरण पर ध्यान दीजिए जहाँ दादाजी शराब के बहुत गहरे लती रहे हों और उनका बेटा भी शराबी बन गया हो और बाद में यह समस्या तीसरी पीढ़ी में भी आ गई हो। एक ऐसा पैटर्न चला आ रहा हो जहाँ वे सब एक ही प्रकार की समस्या से संघर्ष कर रहे हों। पारिवारिक पीढ़ी में कुछ गड़बड़ी हो सकती है–न कि मात्र उस व्यक्ति में जो संघर्ष कर रहा है जिसके कारण–इस प्रकार का फल आ रहा है। इस प्रकार की बार–बार आने वाली समस्याओं का क्या कारण हो सकता है–चाहे वह व्यवहार हों, जीवन के अनुभव हों, विपत्तियाँ आदि हों? क्या इन समस्याओं का आत्मिक कारण है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती जातीं हैं? यदि ऐसा है तो एक व्यक्ति को गहराई में जाने की आवश्यकता है न कि केवल उसके लक्षणों पर विचार करने की। ऐसे व्यक्ति को मूल कारण ढूँढ़ने की आवश्यकता है जिसका स्वरूप आत्मिक हो सकता है।

पीढ़ियों से चले आ रहे बन्धनों के उदाहरण

कुछ समस्याएं जिनका हम सामना करते हैं वे पीढ़ियों के बन्धनों के कारण हो सकती हैं–पापमय आचरण और जीवनशैली जैसे झूठ बोलना, धोखा देना, क्रोध, हिंसा, जुआ खेलना, शराब पीना, नशीले पदार्थों का लती होना, व्यभिचार, अनैतिकता, विनाशकारी व्यक्तित्व, बुराई, आत्महत्या की आदत, और हर समय काम करने का लती आदि। यह सूची और

लम्बी हो सकती है। जीवन की अन्य समस्याएं जैसे-बार-बार बीमार होना, तलाक, आर्थिक दिवालियापन, व्यापार में बार-बार असफलता, अन्य क्षेत्रों में भी असफलताएं, निराशाएं, मानसिक/ भावनात्मक हानि, अनुचित डर, असुरक्षा, हीन भावना, तिरस्कार, गरीबी, खाने-पीने की अनुचित आदत, विवाह के बाहर बच्चे पैदा होना, शारीरिक और मानसिक विकृतियाँ, बांझपन, गर्भपात, बार-बार दुर्घटनाएं होना, दुर्घटना की सम्भावना और अस्वभाविक अथवा समय से पूर्व मृत्यु भी पीढ़ियों से चले आ रहे बन्धनों के कारण हो सकते हैं।

यह सार्वभौमिक उपाय नहीं है

इससे पहले कि हम इस अध्ययन में आगे बढ़ें, हमें यह समझना आवश्यक है कि पीढ़ियों से चले आ रहे बन्धनों के विषय में बात करते हुए, यह हमारी सभी समस्याओं का समाधान नहीं है जिनका हम सामना कर रहे हैं। पीढ़ियों से चले आ रहे बन्धनों को समझने और तोड़ने से यह आवश्यक नहीं कि यह जीवन की सभी समस्याओं का हल कर दे। सभी समस्याएं पीढ़ियों से चले आ रहे बन्धनों के कारण नहीं होती हैं। उदाहरण के लिए कि किसी व्यक्ति के लगातार सिर में दर्द होता है तो इसका कारण पीढ़ियों का बन्धन नहीं हो सकता बल्कि यह इसलिए भी हो सकता है कि वह व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में सोता नहीं है। अतः हमें सावधान रहना चाहिए कि सब कुछ पीढ़ियों से चले आ रहे बन्धनों के कारण नहीं होता है। हमें ऐसा नहीं मानना चाहिए कि केवल यही बात हमें मानकर जीना है। समस्या के अन्य कारण भी हो सकते हैं।

अन्य बातें भी शामिल हैं

यद्यपि कुछ पापमय आदतें एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में आते हैं, लेकिन अन्य बातें भी शामिल हो सकतीं हैं। आत्मिक कारणों के अलावा कुछ व्यक्तिगत, वंशानुगत और पर्यावरण सम्बन्धित बातें हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो नशीली वस्तुओं पर निर्भर है, यह आवश्यक नहीं कि पिछली पीढ़ियों में कोई इस लत से ग्रसित था, परन्तु

यह इसलिए है कि उस व्यक्ति ने गलत रहन-सहन अपना रखा है जो गलत प्रभाव के कारण है।

सत्य को जानने और उसे लागू करने की आवश्यकता है

तौभी हमें यह समझने की आवश्यकता है कि पीढ़ियों के बन्धन क्या हैं और यदि कोई ऐसा बन्धन है तो जो समस्या का मूल कारण है, हम इस सत्य को कैसे लागू करें ताकि कोई स्थायी समाधान ढूँढ़ा जा सके। जब तक हम समस्या की जड़ को नहीं समझेंगे तब तक हम कभी भी उस समस्या का समाधान नहीं ढूँढ़ पाएगे। हम इस सत्य को अपने लिए और दूसरों की सेवा करते हुए प्रयोग कर सकते हैं।

"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और माँस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं" (इफिसियों 6:12)।

हमारा युद्ध "लहू और माँस" से नहीं है- न ही लोगों के साथ है परन्तु आत्मिक दुष्टता, दुष्टात्माओं की शक्तियों, अन्धकार की सामर्थ, शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के विरोध में, जो हम पर आक्रमण करके हमारे विरोध में आती हैं। यही आत्मिक संघर्ष है। अतः कुछ समस्याऐं जिनका हम सामना करते हैं वे आत्मिक हैं।

परमेश्वर का वचन हमें चेतावनी देता है कि हम शैतान को मौका न दें-"शैतान को अवसर मत दो" (इफिसियों 4:27)। हमें सावधान रहना चाहिए। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण बात है कि हम यह जानें कि शैतान हमारे जीवन में कैसे प्रवेश करता है। केवल तभी हम शैतान का सामना सफलतापूर्वक कर सकेंगे। यदि हमें ठीक से यह पता नहीं है कि शैतान किस प्रकार हमारे जीवनों में प्रवेश करता है, तब हमें यह नहीं पता चलेगा कि किस प्रकार उसे अपने जीवनों से दूर रखें। यदि हमें समस्या की जड़ नहीं मालूम है तो यह केवल "छाया से लड़ाई" करना है-वास्तविक व्यक्ति से लड़ाई करने की अपेक्षा हम केवल उसकी छाया से लड़ाई करते रहेंगे।

शब्द और शब्दावली

मसीही संसार में प्रायः "पारिवारिक श्राप" और "पीढ़ियों का श्राप" कहा जाता है। इस पुस्तक में हम श्राप शब्द का प्रयोग नहीं करेंगे। केवल हम इसमें बन्धन शब्द का प्रयोग करेंगे क्योंकि इससे समस्या की जड़ ठीक से समझी जा सकती है। "श्राप" शब्द प्रायः कुछ बोले गए शब्दों के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है कुछ ऐसा जो हमारे जीवन में बोला गया हो। तौभी हम बन्धनों के विषय में बात कर रहे हैं जहाँ शत्रु ने पारिवारिक रेखा में कहीं अवसर पाकर प्रवेश किया हो और उस वंशानुक्रम में किसी व्यक्ति को बन्धक बना लिया हो। कहीं कहीं "पारिवारिक श्राप", 'पीढ़ियों का श्राप' और 'पीढ़ियों का बन्धन' आदि शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किये जा सकते है। फिर भी आवश्क यह है कि हम सत्य को जाने और उन्हें अपने जीवन में लागू करें, चाहे हम किसी भी शब्दावली का प्रयोग क्यों न करें।

> हमें यह समझने की आवश्यकता है कि पीढ़ियों के बन्धन क्या हैं और यदि कोई ऐसा बन्धन है तो हम इस सत्य को कैसे लागू करें ताकि कोई स्थायी समाधान ढूँढ़ा जा सके।

1
पीढ़ियों का बन्धन क्या है?

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूँ (निर्गमन 20:3-6)।

परमेश्वर ने दो आज्ञाएें दीं हैं। पहली है कि उसके अतिरिक्त और कोई परमेश्वर नहीं है, और दूसरी कि कोई भी व्यक्ति किसी प्रकार की खुदी हुई मूर्ति को दण्डवत् न करे। प्रभु यहाँ यह भी कहते हैं कि इन आज्ञाओं के उल्लंघन करने के फलस्वरूप यह अधर्म तीसरी और चौथी पीढ़ी तक चलता रहेगा। यहाँ हम देखते हैं कि एक विशेष पीढ़ी झूठे ईश्वरों के सामने झुकती है तो इससे वे अपने जीवनों में 'अधर्म' के लिए द्वार खोलते हैं और यही अधर्म अगली पीढ़ी को भी विरासत में देते हैं। हम इसे "पीढ़ियों का बन्धन" कहते हैं।

यही एक पहला समय है जहाँ पीढ़ियों के बन्धनों के विषय में बताया गया है। यह जानना और भी महत्वपूर्ण है कि यह बात स्वयं परमेश्वर के द्वारा बताई जा रही है। इसलिए पीढ़ियों का बन्धन कुछ ऐसी बात नहीं है जिसे लोग डर के कारण मन में बसाए रखते हों। अथवा अगुओं के द्वारा जो अपने स्वार्थ के लिए लोगों को डरा कर रखते हों। यह स्वयं प्रभु परमेश्वर ही था जिसने अपने लोगों को अधर्म के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आने के विषय में चेतावनी दी। यहाँ पर पवित्र शास्त्र के कुछ अन्य पद दिए गए हैं जहाँ पर इसी बात को दोहराया गया है :

यही विचार अन्य चार स्थानों पर भी प्रस्तुत किए गए हैं। अतः हम कोई ऐसे धर्म-विज्ञान का विकास नहीं कर रहे हैं जो बाइबल की एक घटना पर आधारित हो।

"हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप को क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है"(निर्गमन 34:7)।

" यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है" (गिनती 14:18)।

"तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूँ" (व्यवस्थाविवरण 5:9)।

"तू हज़ारों पर करुणा करता रहता परन्तु पूर्वजों के अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंश के लोगों को भी देता है, हे महान् और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है" (यिर्मयाह 32:18)।

मूर्तिपूजा

मूर्तिपूजा गलत है। परमेश्वर मूर्तिपूजा के लिए मना करता है। हमें किसी भी खुदी हुई, कागज की, इलैक्ट्रॉनिक मूर्ति अथवा किसी और वस्तु की पूजा नहीं करनी है, केवल सत्य और जीवित परमेश्वर की आत्मा और सच्चाई से आराधना करना है। अतः हम कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछ सकते हैं:

- क्यों किसी भी मूर्ति अथवा प्रतिमा के सामने झुकना गलत है–चाहे वह यीशु, किसी सन्त अथवा किसी और की ही क्यों न हो?
- यीशु की तस्वीर की पूजा करना क्यों गलत है?

आइए देखें कि परमेश्वर का वचन मूर्तियों की पूजा के विषय में क्या कहता है?

"फिर मैं क्या कहता हूँ? क्या यह कि मूर्ति पर चढ़ाया गया बलिदान कुछ है, या मूर्ति कुछ है? नहीं, वरन् यह कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं; वे परमेश्वर के लिये नहीं परन्तु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो। तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे में से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के साझी नहीं हो सकते। क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते हैं? क्या हम उस से शक्तिमान हैं?(1 कुरिन्थियों 10:19–22)।

वचन के अनुसार मूर्ति का कोई महत्व नहीं है। तौभी मूर्तिपूजा के समक्ष किए गए बलिदान वास्तव में दुष्टात्माओं के लिए किए गए बलिदान हैं, न कि जीवित परमेश्वर के लिए। और इससे एक व्यक्ति दुष्टात्माओं के साथ संगति करता है और दुष्टात्माओं की शक्तियों को अपने जीवनों में प्रवेश के लिए द्वार खोलता है। जब हम परमेश्वर की आराधना और स्तुति करते हैं, तब हम जीवित परमेश्वर से संगति करते हैं और तब वह हमारे हृदयों और जीवनों में आता है। इसी प्रकार से, जब कोई व्यक्ति मूर्तियों को दण्डवत् करता है और उन पर बलिदान चढ़ाता है, तब वह दुष्टात्माओं के साथ संगति करता है जो उन मूर्तियों के पीछे है और उन शक्तियों को अपने जीवन में प्रवेश करने हेतु मौका देता है।

सावधानी का वचन

हमें सत्य को प्रेम और नम्रता से बताना है। हमें इन सत्यों को अपने मित्रों के साथ सावधानी से बाँटना चाहिए जो मूर्तियों को आदर देते हैं।

“जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझवाला कहलाता है और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है” (नीतिवचन 16:21)।

व्यवस्थाविवरण 7 में परमेश्वर अपने लोगों को मूर्तियों के विषय में बताता है।

“उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियों को तुम आग में जला देना; जो चाँदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फँसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है” (व्यवस्थाविवरण 7:25,26)।

परमेश्वर अपने लोगों को चेतावनी देता है कि वे अपने घरों में श्रापित वस्तु न रखें। उन्हें ऐसे आभूषणों को लाने के लिए भी मनाही थी जिन पर मूर्ति बनी हों। ऐसी वस्तुएं परमेश्वर के सम्मुख घृणित होती थीं जिन्हें परमेश्वर पसन्द नहीं करता था। वे लोग जो ऐसी श्रापित वस्तुओं को लाते हैं वे मूर्तियों के साथ आने वाली शक्तियों के बन्धन में हो जाते हैं। बन्धन और विनाश उनके जीवन में प्रवेश करता है। यह एक और कारण है कि मूर्तिपूजा गलत है। मूर्तियों के पीछे की शक्तियाँ हमें बन्धन में रखती हैं और हम मूर्तियों के साथ विनाश के लिए रखे जाएंगे यदि हम इस विषय में परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघंन करेंगे तो हम भी उसी विनाष के भागी होंगे जो मूर्तियों के साथ होगा।

> हमारे जीवनों में मूर्ति वह हो सकती है जो परमेश्वर का स्थान लेती है।

हम उस वस्तु की तरह बन जाते हैं जिसकी हम पूजा करते हैं। “जैसा वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं; और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही जाएँगे (भजनसंहिता 115:8)। हम पूजा करनेवाली वस्तु के

समान बन जाते हैं। जब किसी वस्तु के समान बन जाते हैं। जब हम किसी मूर्ति के सामने झुकते हैं अथवा उसकी सेवा करते हैं, तब वह आत्मा जो उस मूर्ति के द्वारा काम करती है हमारे जीवन में कदम (प्रभाव हेतु एक क्षेत्र) रखती है और हमें बन्धन में रख कर हमें बार–बार झुकने हेतु विवश करती है। इसी के कारण यह रीति हमसे हमारे बच्चों में और आनेवाली पीढ़ियों में प्रवेश करती जाती है और उन्हें भी झुकने के लिए विवश करती है।

व्यक्गित बन्धन बनाम पीढ़ियों के बन्धन

उस अधर्म को जिसे हमने अपने जीवनों में प्रवेश दिया है, जो आज हमें प्रभावित करती है, उसे हम व्यक्तिगत बन्धन कहेगें। यदि हम इसकी शक्ति को अपने ऊपर से नहीं तोड़ते हैं तो इसमें यह विशेषता है कि यह हमारी आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँच जाएगी। यदि यह हमारी अगली पीढ़ियों तक पहुंचती है, तो इसे पीढ़ियों का बन्धन कहते हैं। कुछ लोग पीढ़ियों के बन्धनों के कारण कष्ट में हो सकते हैं जो उन्हें विरासत में मिला है यह आवश्यक नहीं कि उन्होंने इसे वास्तव में अपने जीवनों में अनुमति दी है। जैसा पहले बताया गया है कि ये बन्धन बहुत प्रकार के हो सकते हैं: पापमय व्यवहार और जीवनचर्या जैसे झूठ बोलना, धोखा देना, गुस्सा, हिंसा, जुआ खेलना, शराब पीना, नशीले पदार्थों पर निर्भर होना, व्यभिचार, अनैतिकता, विनाशकारी व्यक्तित्व, बुराई, आत्महत्या की चाह, आवश्यकता से अधिक कामकाजी आदि। यह सूची और लम्बी हो सकती है। जीवन की अन्य समस्याएं जैसे–बार–बार बीमार होना, तलाक, आर्थिक हानि, व्यापार में बार–बार असफलता, अन्य क्षेत्रों में भी असफलताएं, निराशाएं, मानसिक/ भावनात्मक हानि, अनुचित डर असुरक्षा, हीनभावना, तिरस्कार, गरीबी, खाने–पीने की अनुचित आदत, विवाह के बाहर बच्चे पैदा होना, शारीरिक और मानसिक विकृतियाँ, बांझपन, गर्भपात, बार–बार दुर्घटनाएं होना, दुर्घटना की सम्भावना और अस्वभाविक अथवा समय से पूर्व मृत्यु भी पीढ़ियों से चले आ रहे बन्धनों के कारण हो सकती हैं।

यहाँ हमारा उद्देश्य यह सीखना है कि हम व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को कैसे तोड़ें।

लालच मूर्तिपूजा है

पुराने नियम में प्रतिमाओं और मूर्तियों के सामने झुकने को मूर्तिपूजा कहा गया है। नए नियम में इसे अधिक विस्तृत रूप से प्रकट किया गया जहाँ लालच को मूर्तिपूजा के बराबर कहा गया है।

"इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है" (कुलुस्सियों 3:5)।

"क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूर्तिपूजक के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं" (इफिसियों 5:5)।

प्रत्येक प्रकार का लालच अथवा अनियन्त्रित वासना मूर्तिपूजा के बराबर है। उदाहरण के लिए, यदि किसी की अनियन्त्रित इच्छा-एक लत है, तो वह भी मूर्तिपूजा समझी जाएगी और इसके वही परिणाम होंगे। ये लतें दुरुपयोग, अश्लीलता, शराब, एक अनैतिक जीवनचर्या आदि हैं। यही आत्माएं जो मूर्तिपूजा के साथ रहती हैं वे ही कार्यन्वित होकर एक व्यक्ति को बन्धन में रखती हैं। अतः हो सकता है कि मूर्तियाँ हमारे घरों में न हों, परन्तु हमें यह देखने की आवश्यकता है कि कहीं लोभ तो हमारे हृदयों में नहीं है।

पीढ़ियों की आशीष

दूसरी ओर, बाइबल हमें पीढ़ियों की आशीष के विषय में बताती है। पीढ़ियां की आशीष का एक बड़ा उदाहरण इब्राहीम के जीवन में देखा जा सकता है जहाँ परमेश्वर उससे कहता है कि वह और उसकी आने वाली पीढ़ियों एक आशीष पाएंगी।

"और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात् पीढ़ी-पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग-युग की वाचा बाँधता हूँ, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूँगा" (उत्पत्ति 17:7)।

"यहोवा यह कहता है, "जो वाचा मैंने उनसे बाँधी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुँह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुँह से, और तेरे पुत्रों और पोतों के मुँह से भी कभी न हटेंगे" (यशायाह 59:21)।

जीवित और सत्य परमेश्वर के साथ की गई वाचा पीढ़ियों की आशीषों को प्रवाहित करती है।

> हम या तो पीढ़ियों की आशीषें या पीढ़ियों के बन्धन को प्रारम्भ करने अथवा उन्हें बढ़ाने वाले हो सकते हैं।

2
अधार्मिकता और पाप

अधार्मिकता बनाम पाप

"अधार्मिकता" और "पाप" शब्दों को समझने से हमें पीढ़ियों के बन्धन को समझने में सहायता मिलेगी। ये दोनों शब्द धर्मशास्त्र में प्रयोग किए गए हैं।

"हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो प्रभु हम लोगों के बीच में होकर चले, ये लोग हठीले तो है, तौभी हमारे अधर्म और पाप की क्षमा कर और हमें अपना निज भाग मान के ग्रहण कर" (निर्गमन 34:9)।

इब्रानी में "अधर्म" के लिए "अवोन" (ंअवद) शब्द है जिसका अर्थ है "विकृति, पथभष्टता या उद्दंडता", जबकि "पाप" के लिए "खटावाव" (khatawaw) आया है जिसका अर्थ है "अपराध"। सामान्यत: हम इस प्रकार देख सकते हैं : 'अधार्मिकता' एक व्यक्ति के स्वभाव में होता है जिससे हमें पाप करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जबकि "पाप" गलत काम है। यह वह काम है जो उद्देश्य को खो देता है अथवा परमेश्वर की आज्ञा को उल्लघंन करवाता है।

अधर्म पीढ़ियों से चला आता है

परमेश्वर ने कहा कि अधार्मिकता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आती है। कोई व्यक्ति पाप करता है परन्तु वह अधार्मिकता जो उसे पाप करने के लिए विवश करती है वह पीढ़ियों से चली आती है। हम विलापगीत 5 में पढ़ते हैं कि जिस अधार्मिकता ने पिताओं को पाप करने के लिए उकसाया था वह उनके बच्चों में आ गई।

"हमारे पुरखाओं ने पाप किया, और मर मिटे हैं; परन्तु उनके अधर्म के कामों का भार हम को उठाना पड़ा है" (विलापगीत 5:7)।

"हे प्रभु यहोवा, तूने बड़ी सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है। तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है। तू हज़ारों पर करुणा करता रहता परन्तु पूर्वजों के अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंश के लोगों को भी देता है, हे महान् और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं को यहोवा है" (यिर्मयाह 32:17,18)।

"देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा" (भजनसंहिता 51:5)।

यहाँ तक कि जब हम पैदा हुए तभी से अधर्म हममें डाल दया गया।

क्या इसकी अनुमति देकरं परमेश्वर ने सही किया?

यह बात ठीक प्रतीत नहीं होती कि कोई व्यक्ति अपने पूर्वज के कामों के कारण कष्ट उठाए। एक व्यक्ति इसका कैसे जबाव देगा?

ऐसा लग सकता है कि परमेश्वर सही नहीं है क्योंकि वह पिताओं की अधार्मिकता का दण्ड पुत्रों और नाती-पोतों को देता है। आगे हम ऐसा पढ़ते हैं जहाँ परमेश्वर बिल्कुल साफ-साफ कहता है कि जो प्राणी पाप करे वही मरेगा। आइए दोनों वचनों को देखें:

"पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए; जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए" (व्यवस्थाविवरण 24:16)।

"फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:"तुम लोग जो इस्राएल देश के विषय में यह कहावत कहते हो,'खट्ठे अंगूर तो खाए पुरखा लोगों ने, परन्तु दाँत खट्ठे हुए बच्चों के। इसका क्या अर्थ है? प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की शपथ, तुम को इस्राएल में फिर यह कहावत कहने का अवसर न मिलेगा। देखो, सभों के प्राण तो मेरे हैं।, जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा। जो प्राणी पाप करे

वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा" (यहेजकेल 18:1–4,20)।

बच्चों के पापों की खातिर पिताओं को नहीं मरना पड़ेगा। प्रत्येक जन अपने ही पापों की खातिर मरेगा। यहाँ 'पाप' के लिए इब्रानी शब्द 'ींजम' (खाटे) आया है जिसका अर्थ है अपराध।

यह गड़बड़ी वाली बात लगती है। जबकि कम से कम पाँच पद यह कहते हैं कि अधर्म एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चला जाता है, ये दो पद लगभग विरोधाभासी प्रतीत होते हैं। हमें पाप और अधर्म के बीच अन्तर को याद करने की आवश्यकता है ताकि इसकी ठीक समझ प्राप्त हो सके।

परमेश्वर धर्मी परमेश्वर है

परमेश्वर एक धर्मी परमेश्वर है। इसमें किसी प्रकार का प्रश्न ही नहीं है कि परमेश्वर न्यायी है और वह कोइ अन्याय नहीं है। हमें दण्ड जो न्याय की प्रक्रिया के द्वारा दिया जाता है, और परिणाम जो गलत कामों की प्रतिक्रिया स्वरूप प्राप्त होता है, उनके बीच अन्तर को समझना है। पाप का दण्ड उसी व्यक्ति को दिया जाता है जिसने पाप किया है। परन्तु उस पाप का परिणाम उस व्यक्ति के अतिरिक्त जिसने पाप किया है, अन्य लोगों को भी प्रभावित करता है।

एक परिवार के विषय में कल्पना कीजिए जहाँ उनके पिताजी एक बड़ी फर्म में सर्वोच्च पद पर काम करते हैं। उस पिता ने धन में बहुत बड़ी हेराफेरी की है और देश के कानून ने उसे दोषी पाकर 10 वर्षों की जेल की सजा सुनाई। यद्यपि वह अकेले ही इस पाप के दण्ड को भोगता है जो 10 वर्षों का कारावास है, परन्तु उसके पूरे परिवार–उसकी पत्नी, सभी बच्चों और नाती–पोतों को उसके अपराध के परिणामों को भुगतना पड़ेगा। परिवार के सदस्यों को बहुत सारे भावनात्मक दर्द से होकर

गुज़रना पड़ेगा और परिवार की प्रतिष्ठा को भी ठेस पहुँचेगी। दण्ड से अधिक भयानक परिणाम होते हैं।

व्यवस्थाविवरण 24 और यहेजकेल 18 में परमेश्वर पाप के दण्ड के विषय में कहता है- "जो प्रणी पाप करे वही मरेगा"-परन्तु बाकी अन्य पदों में (निर्गमन 20:3-6; निर्गमन 34:7; गिनती 14:18; व्यवस्थाविवरण 5:9; यिर्मयाह 32:18), जहाँ हम पढ़ते है कि अधर्म एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाता है, जिसके विषय में हम पाप के परिणामों के साथ चर्चा कर रहे हैं। कुछ विशेष पाप हैं (जैसे मूर्तिपूजा) जिसका व्यक्ति दण्ड ही नहीं उठाता है परन्तु बड़े-बड़े परिणामों को भी भुगतता है। इसके द्वारा दुष्टात्माओं के कामों के लिए मार्ग खुलता है और यह कार्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवेश करता है। प्रत्येक पीढ़ी इसके परिणामों को भुगतेगी। अत: परमेश्वर न्यायी है जब वह दुष्ट को दण्ड देता है यद्यपि उस व्यक्ति के पाप के परिणाम अगली पीढ़ी में जा रहे हैं। परमेश्वर इसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा और न उसे रोकेगा जब तक कि कोई उस पर अधिकार ले और उन बन्धनों को तोड़े जिन्हें लाया गया है। वह अवश्य करना चाहिए जो परमेश्वर का वचन कहता है ताकि हम स्वतन्त्र हो सकें।

पाप का दण्ड उसी व्यक्ति को दिया जाता है जिसने पाप किया है। परन्तु उस पाप का परिणाम उस व्यक्ति के अतिरिक्त जिसने पाप किया है, अन्य लोगों को भी प्रभावित करता है।

3
पारिवारिक बन्धन कैसे आते हैं?

श्रापों का कारण होता है

"जैसे गौरैया घूमते-घूमते और सूपबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता" (नीतिवचन 26:2)।

श्रापों का कुछ कारण होता है। वे यूँ ही नहीं होते हैं। चिड़िया यूँ ही नहीं उड़ती हैं परन्तु किसी "विशेष उद्देश्य" से उड़ती हैं। इसी प्रकार से श्राप यूँ ही नहीं पड़ता है परन्तु सामान्यत: इसके पीछे एक कारण होता है। अत: जब हमें पता चल जाता है कि श्राप कैसे काम करता है तो हम इसे रोकने के लिए आवश्यक सावधानी बरत सकते हैं। आइए कुछ कारणों पर विचार करे जिनके कारण हमारे जीवनों में अधर्म के लिए द्वार खुलते हैं और पीढ़ियों का बन्धन आता है।

मूर्तियों/झूठे ईश्वरों की पूजा करना

इस पर इस पुस्तक में चर्चा की जा चुकी है। जब एक व्यक्ति झूठे ईश्वरों के सामने झुकता है तो यह अधर्म आनेवाली पीढ़ियों में चला जाएगा (निर्गमन 20:5)।

बलिदान और समर्पण

जब कोई व्यक्ति बलिदान करता है या समर्पण करता है, चाहे वह बच्चे का अथवा परिवार का हो, उस वस्तु के लिए जिसमें दुष्टात्माओं का प्रभाव है- या झूठे देवी-देवता हो सकते है, यह पारिवारिक बन्धन हेतु द्वार खोलता है।

मन्नत मानना

मन्नत मानना एक प्रतिज्ञा करना है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने काम, सेवा अथवा उद्देश्य की पूर्ति होने पर शर्त के रूप में करता है। वे मन्नतें

जो नकारात्मक, पापमय होती हैं और प्रत्यक्षरूप से अथवा अप्रत्यक्षरूप से दुष्टात्माओं के साथ बान्धी जाती हैं तो वे भी दुष्टात्माओं के कामों और उसके बन्धन हेतु द्वार खोलती हैं। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति किसी मूर्ति के सामने मन्नत मानता है कि यदि उसको कोई प्रार्थना का उत्तर मिलेगा, तो यह मन्नत पीढ़ियों के बन्धन हेतु द्वार खोल देती है।

पापमय कार्य

वे पाप जिनका अंगीकार नहीं किया गया है वे दुष्टात्मा के कार्यो के लिए द्वार खोलते हैं। इसका अच्छा उदाहरण राजा दाऊद का है (2 शमूएल 12) जिसने बेतशेबा को प्राप्त करने की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए कत्ल और व्यभिचार किया। नातान नबी ने उसे चेतावनी दी कि इस पापमय काम के कारण उसके परिवार से तलवार कभी नहीं हटेगी।

"तूने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हित्ती ऊरिय्याह को तूने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है। इसलिये अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तूने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी कर लिया है। यहोवा यों कहता है,'सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूँगा; और तेरी पत्नियों को तेरे सामने लेकर दूसरे को दूँगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा। तूने तो वह काम छिपाकर किया; पर मैं यह काम सब इस्त्राएलियों के सामने दिन दुपहर कराऊँगा।" तब दाऊद ने नातान से कहा,"मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।" नातान ने दाऊद से कहा, "यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा" (2 शमूएल 12:9-13)।

यह तलवार, विनाश, हिंसा और मृत्यु का संकेत है। इस पापमय काम के कारण दाऊद ने अपने परिवार में विनाश, हिंसा और मृत्यु का द्वार खोल दिया। दाऊद के पुत्र अम्मोन ने अपनी सगी बहन के साथ

व्यभिचार किया और घृणित कार्य किया। उसके दूसरे पुत्र अबशालोम ने अपने पिता के विरोध में विद्रोह किया।

एक पापमय काम का परिणाम होता कभी-कभी तो यह इतना लम्बा होता है जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए जानबूझकर कराया गया गर्भपात अधर्म के लिए विनाश का द्वार खोल देता है जहाँ से कई बातों का नाश होने लगता हैं। जब कोई गर्भपात करता है तो वह मृत्यु की आत्मा के लिए द्वार खोलता है जिसके कारण अन्य कामों में भी विनाश आता है जैसे व्यापार,धन आदि। वे पाप जिनका अंगीकार नहीं किया गया है वे शैतान के कामों के लिए खुले द्वार बने रहते हैं। यह हमारे जीवन में आवश्यक है कि हम अपने पापों को मानें, पश्चात्ताप करें और उन्हें छोड़ दें। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम पाप पर विजय प्राप्त करें जो हमारे जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रतीक्षा कर रहा है। हमें किसी भी प्रकार के शैतान के कामों को प्रवेश करने से पहले द्वार बन्द करना है।

“यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है”(उत्पत्ति 4:7)।

उत्पत्ति 4:7 में परमेश्वर ने कैन से कहा जो अपने भाई से नाराज़ था और उसे मार डालने के लिए तैयार था। परमेश्वर ने उसे उस पाप के विषय में चेतावनी दी जो द्वार पर खड़ा था और उसमें प्रवेश करना चाहता था। परन्तु कैन ने पाप को प्रवेश करने की अनुमति दी और हत्यारा बन गया।

डरावनी घटनाएं/अनुभव

भावनात्मक घावों के प्रति नकारात्मक क्रियाए बिना वज़ह के भय के लिए हमारे जीवनों में द्वार खोलती हैं और यह भय आनेवाली बहुत सी पीढ़ियों में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कार की दुर्घटना

का शिकार हुआ है तो वह भावनात्मक रुप से इतना परेशान हो जाता है जिसके द्वारा उस व्यक्ति के जीवन में भय की आत्मा प्रवेश कर जाती है। वह व्यक्ति इतना डर जाता है कि सड़क पर चलने और कार में बैठने से भी घबराता है। यह भय कई पीढ़ियों में प्रवेश कर जाता है और जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी प्रभाव डालता है। प्रियजन की मृत्यु, बुराई, किसी अप्रिय घटना को देखना आदि अन्य घातक घटनाओं के अनुभव हो सकते हैं जो लोगों को बन्धनों में रखते हैं।

श्राप/तन्तमन्त्र

श्राप और तन्त्रमन्त्र निश्चय ही हमारे जीवनों में पीढ़ियों के बन्धनों हेतु द्वार खोलते हैं। कम से कम तीन तरीकों से ये कार्यान्वित होते हैं।

स्वयं पर बोले गए श्राप

अनजाने में हमारे अपने शब्द ही श्राप के लिए आधार बन जाते हैं हम अत्यधिक दबाव, क्रोध, ईर्ष्या, चोट और निराशा में कुछ बातें बोलतें हैं। अपनी देह के विषय, अपने ऊपर बोले गए श्रापों के कारण हमें दूसरे लोगों के साथ मिलने में रुकावट आती है और जीवन के कुछ निश्चित अनुभवों का आनन्द उठाने के मार्ग में बाधा लाते हैं:

- “मैं कभी बच्चे पैदा नहीं करूँगा” (एक ऐसा व्यक्ति जो छोटे बच्चों के स्कूल अथवा बच्चों के चर्च में काम करता है और उनके साथ काम करते समय उन्हे उनके साथ काम करते समय उन्हें बड़ी कठिनाई महसूस होती है)।
- मेरे बच्चे बड़े भयानक हैं” (जब माता-पिता कहते रहते हैं कि उनके बच्चे भयानक हैं तो वे भयानक बन जाते हैं)।
- “मैं कभी यौन का आनन्द नहीं लूँगा” (यौन और शारीरिक शोषण के शिकार व्यक्ति)।
- “मैं पुरुषों से नफरत करती हूँ” (स्त्रियाँ)

- "मैं अपने जीवन में अब कभी भी अन्य पुरुष (स्त्री) को इतने निकट नहीं आने दूँगा" (टूटे हुए सम्बन्ध के अनुभव को सहनेवाला)।

पिछली पीढ़ी के द्वारा लिए गए श्राप

पिछली पीढ़ी के द्वारा जानबूझ कर लिए गए श्राप अगली पीढ़ी को प्रभावित करते हैं।

"सब लोगों ने उत्तर दिया,"इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो।" (मत्ती 27:25)।

व्यक्तियों/पारिवारिक सदस्यों पर बोला/कराया गया जादूटोना

वे लोग जो इस प्रकार के अभ्यास में पड़े हैं जानबूझ कर व्यक्तियों अथवा पूरे परिवार के ऊपर श्राप बोल सकते हैं और इसके द्वारा पीढ़ियों के बन्धन का द्वार खुलता है।

पारिवारिक विरासत (वस्तु) की उपस्थिति जो घृणित है

जिस वस्तु को परिवार की धरोहर समझा जाता है कि वह एक अद्धभुत विरासत है और उसे घर का प्रत्येक सदस्य रखना चाहता है, लेकिन वह वास्तव में एक लेकिन यदि वह वस्तु एक झूठे ईश्वर को समर्पित की गई हो, तो वह वास्तव में एक शाप के रूप में हो सकती है।

इसके विषय में अज्ञान होने और इसे घर लाकर सजाने के द्वारा यह वस्तु वास्तव में हमें बन्धन की ओर ले जा सकती है।

"उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जला देना; जो चाँदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फँसेगा; क्योकि ऐसी वस्तुएँ हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। और कोई घृणित वस्तू अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने

की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तू जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है" (व्यवस्थाविवरण 7:25,26)।

परिवारों के मुखियाओं (पिताओं) के फैसले

पिताओं के द्वारा लिए गए फैसले बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। कई बार पूर्वजों का बन्धन इसलिए होता है कि वे भूत विद्या से या किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्ध रखते थे। कभी-कभी ऐसा लगता है भविष्य जानने के लिए राशिफल को जानना कोई बुरी बात नहीं है, परन्तु यही पीढ़ियों के बन्धनों के लिए द्वार खोलता है। पूर्वजों के द्वारा नक्षत्र विद्या, जन्म के पत्थरों की अगूँठी पहनना, मन्त्र आदि के अभ्यास के कारण शैतान के कामों को उनके बच्चों में यह बन्धन जाता है और फिर उनकी आनेवाली पीढ़ियों में भी चला जाता है।

श्रापों का कुछ कारण होता है। वे यूँ ही नहीं होते हैं। परन्तु सामान्यत: इसके पीछे एक कारण होता है। अत: जब हमें पता चल जाता है कि श्राप कैसे काम करता है तो हम इसे रोकने के लिए आवश्यक सावधानी बरत सकते हैं।

4
व्यक्तिगत और पारिवारिक बन्धनों को पहचानना

"चोर किसी और काम के लिय नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात रकने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ" (यूहन्ना 10:10)।

परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास बुहतायत का जीवन हो अधिकाई का जीवन। यह शैतान ही है जो चुराता, मारता और नाश करता है।

उन विभिन्न तरीकों को समझने के बाद कि पारिवारिक बन्धन कैसे आते हैं, हमें अपने जीवनों और परिवारों में देखने की आवश्यकता है कि कहीं पीढ़ियों के बन्धन का चिन्ह तो नहीं है। आइए, अपने जीवनों का आत्मिक सर्वेक्षण करें और व्यक्तिगत तथा पीढ़ियों के बन्धनों को तोड़ने का कदम उठाएं।

कारण और प्रभाव सदैव प्रत्यक्ष रूप से जुड़े नहीं हो सकते हैं

हमें यह जानने की आवश्यकता है कि कारण और प्रभाव सदैव प्रत्यक्षरूप से जुड़े हुए नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो एक नौकरी में बिल्कुल नहीं टिकता है। यह सम्भव है कि वह हर छः महीनों में अपनी नौकरी बदलता रहता है। इस प्रकार की स्थिति में व्यक्ति को ध्यान से देखना चाहिए कि इसका क्या कारण है। उदाहरण के लिए, हम ऐसे व्यक्ति के बारे में पता कर सकते है कि वह दूसरे लोगों के प्रति शत्रुता की भावना रखता है और काम के स्थान पर अन्य लोगों से झगड़ा कर लेता है। सहकर्मियों के विरुद्ध शत्रुता रखना कारण हो सकता है, परन्तु इसका प्रभाव यह होता है कि वह एक स्थान पर लम्बे समय तक नौकरी नहीं कर पाता है। इस व्यक्ति के जीवन में हिंसा की आत्मा हो सकती है जिससे यह व्यक्ति शत्रुता की भावना से भर कर अपने सहकर्मियों और अपने आसपास के लोगों के साथ मेलमिलाप से नहीं रह पाता है।

एक और उदाहरण पर विचार कीजिए जहाँ एक परिवार अनियन्त्रित क्रोध के पीढ़ियों के बन्धन में है। इस परिवार में एक जवान व्यक्ति का विवाह हो जाता है और वह व्यक्ति इसी प्रकार के आचरण में रहता है, और परिणामस्वरूप उसका विवाह टूट जाता है और अन्ततः तलाक हो जाता है। इसका कारण पीढ़ियों का बन्धन है जो अस्वभाविक क्रोध है परन्तु इसका प्रभाव विवाह टूटना है।

हमें समय निकाल कर अपने जीवनों का विश्लेषण और प्रयास करना चाहिए कि कहीं कोई पीढ़ियों का बन्धन व्यक्तिगत जीवन अथवा परिवार में तो नहीं है। हमें इस विषय में अपने परिवार और अपने व्यक्तिगत जीवनों को जाँचना चाहिए। आइए हम अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के बारे में विचार करें और बार-बार होने वाले कामों को पहचाने यदि कुछ ऐसा है, अजीबो-गरीब व्यवहार अथवा और पहचानें कि अनुचित आचरण की अथवा बार-बार आने वाली समस्याओं की कोई घटना तो परिवार में नहीं है। और तब चाचाजी भी अपनी जवानी में चल बसे और अब हम भी अपनी पीढ़ी में इसी डर से रह रहे हैं। यदि हम कुछ ऐसा पाते हैं जो पीढ़ियों के बन्धन की तरह प्रतीत होता है तो, हमें वह द्वार बन्द करना चाहिए। ऐसा करने के द्वारा हम इस बात का धयान रखें कि यह अगली पीढ़ी में प्रवेष्ठा न करने पाए। यदि यदि हम में किसी ऐसी बात से अपराधबोध है जिसके द्वारा बन्धन का द्वार खुलता है तब हमें पश्चात्ताप् करना, उसे छोड़ देना चाहिए और स्वतन्त्रता में चलना चाहिए।

हम स्वतन्त्र हो सकते हैं

शुभ समाचार यह है कि जब हम सत्य को जानते हैं तो सत्य हमें स्वतन्त्र करेगा। यीशु मसीह हमें स्वतन्त्र कर सकता है!

“तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा। इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतन्त्र हो जाओगे” (यूहन्ना 8:32,36)।

5
हम इससे कैसे स्वतन्त्र हो सकते हैं?

हमारी स्वतन्त्रता का अधिकार क्रूस पर प्राप्त किया गया है

"जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे" (1 यूहन्ना 3:8)।

हमारी स्वतन्त्रता क्रूस पर प्राप्त की जा चुकी है। यीष्ाु ष्टौतान के प्रत्येक काम को नाष्ठा करने आया था चाहे वह काम हमारे जीवनों में किसी भी रीति से क्यों न आया हो। यीशु संसार में क्यों आया? यीशु हमें नया धर्म अथवा नया तत्वज्ञान देने नहीं आया कि हम उसका अनुसरण करें अथवा उसके बारे में सोचें। वह प्रत्येक जन के जीवन में शैतान के कामों को नाश करने आया। हमें अपने जीवनों में शैतान के कामों को सहन करने की आवश्यकता नहीं है।

आज संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं जो हमें नया तत्वज्ञान, विचार और धर्म देते हैं। तौभी उनमें से कोई भी खड़ा होकर यह नहीं कह सकता है, "मैं शैतान के कामों को नाश कर सकता हूँ।" केवल यीष्ाु ही यह कर सकता है।

"इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे" (इब्रानियों 2:14)।

यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा उसे (शैतान) नाश किया जिसके पास मृत्यु की शक्ति थी और उसे शक्तिहीन किया। क्रूस हार का स्थान नहीं था, परन्तु क्रूस इतिहास में सबसे बड़ी विजय का स्थान है। क्रूस पर ही यीशु ने शैतान को पराजित किया। उसे यह सब अपने लिए करने की आवष्ठयकता नहीं थी क्योंकि वह सदैव शैतान से बड़ा था, है और रहेगा।

उसने यह हमारे लिए किया है–हमारे प्रतिनिधित्व के रूप में और हमारे स्थान पर !

"और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। और उसने प्रधानताओं और अधिकारियों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि सुनाई" (कुलुस्सियों 2:14,15)।

प्रधानताएं और अधिकार शैतान और दुष्टात्माएं हैं। यीशु ने क्रूस पर उन्हें पूर्णरूप से शक्तिहीन और हथियार रहित कर दिया और उन पर पूर्ण विजय पाई।

"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और माँस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधि कारियों से, और हम संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं" (इफिसियों 6:12)।

यीशु ने शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की सामर्थ को निरस्त्र करके उन्हें शक्तिहीन किया और क्रूस पर विजय प्राप्त करके उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया। यही यीशु आज हमारे संसार में प्रवेश करके आज ही हमें ष्टौतान के प्रत्येक ष्टाक्ति के बंधान से पूर्ण रूप से स्वतंत्र कर सकता है। इसका आपके लिए और मेरे लिए क्या अर्थ है?

"उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है"(कुलुस्सियों1:13,14)।

इस प्रकार, उसने हमें अधंकार (शैतान) के राज्य और अधिकार से छुड़ा लिया है। जब हम अपना विश्वास प्रभु यीशु मसीह में रखते हैं उसी क्षण से हमारे ऊपर से शैतान का वैधानिक अधिकार समाप्त हो जाता है क्योंकि हमें छुड़ाकर स्वतन्त्र कराया गया है। हमें राज्य में प्रवेश कराया गया है, अतः हम यीशु मसीह के राज्य के नागरिक हैं। हम शैतान के

राज्य के नागरिक नहीं है। अतः इस राज्य की अंधकार की शक्ति का अधिकार हमारे जीवनों के ऊपर नहीं है और न ही उसका दावा हमारी आत्मा, प्राण और देह पर है। उसका अधिकार हमारे जीवनों में उतना ही होगा जितना हम उसे देंगे। वचन हमें चेतावनी देता है: "शैतान को अवसर न दो" (इफिसियों 4:27)। अतः द्वार को बन्द करे। अपने जीवन में शैतान को कोई भी प्रवेश न दें।

लहू की सामर्थ

"क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ" (1 पतरस1:18,19)।

पतरस की पत्री यहूदियों व अन्यजाति मसीहियों को लिखी गई जो एशिया माइनर में तितर-बितर होकर रहते थे। पतरस यहूदी और अन्य जातियों के मसीहियों को बताता है कि हम उस उद्देश्यरहित जीवन से छुड़ाए गए हैं जो हमें हमारे पूर्वजों के द्वारा दिया गया था। जिस छुटकारे की बात पतरस कर रहा है वह मूर्तिपूजकों का खोखलापन, अन्धविश्वास और फरीसियों की रीतियों से छुटकारा है।

यीशु के लहू ने हमारे लिए बहुत से काम किए हैं-इसने हमारे पापों को धोकर हमें शैतान की शक्ति से मुक्त किया है। मसीह के लहू ने बेकार के जीवन जीने के तरीके से भी मुक्त किया है जो हमारे पूर्वजों के द्वारा हमें दिया गया था। चाहे किसी भी प्रकार की पूजा या आराध ाना विधाी के द्वारा और हमारे पूर्वजों की विरासत अथवा जीवनशैली के द्वारा दुष्टात्मा के लिए द्वार खोला गया हो, प्रभु यीशु मसीह का लोहू हमें स्वतन्त्र करता है।

क्रूस पर बहाया गया मसीह का लहू हमें प्रत्येक शैतान के बन्धन, पापमय जीवन, अधर्मी आचरण, मन्नतों, समर्पणों और हमारे पुरखाओं के श्रापों से मुक्त होने का अधिकार हमें देता है।

कारावास के द्वार खुले हैं - आपको स्वतन्त्रा में प्रवेष्ठा करने हेतु बाहर निकलना चाहिए।

कारावास के द्वार खुले हैं लेकिन हमें स्वतन्त्रता की ओर बढ़ना है। यीशु ने हमारी स्वतन्त्रता के लिए वह सब कुछ कर दिया है जो उसे करना था। उसका लहू बहाया गया है। उसने शैतान के कामों को नाश करके उस पर विजय प्राप्त की है। परन्तु हमें द्वार से बाहर आना, और अपनी स्वतन्त्रता को स्वीकार करके प्राप्त करना है। यीशु ने कहा,"तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा। इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतन्त्र हो जाओगे" (यूहन्ना 8:32,36)। अज्ञान हमें बन्धन में रखता है। परन्तु सत्य को जानने से हमें स्वतन्त्रता में चलने का अवसर प्राप्त होता है।

आप आशीषित हैं!

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है"

(इफिसियों 1:3)। परमेश्वर ने आपको प्रत्येक उस आशीष से आशीषित किया है जो स्वर्ग से आती है। प्रत्येक आत्मिक आशीष जो स्वर्ग से आती है वह आपकी है, क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि आप आशीषित हों! परमेश्वर आपके पक्ष में है न कि आपके विरोध में है।

सारे द्वारों को स्थाईरूप से बन्द करें

"अब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। तब कहती है,'मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी।' और लौटकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें पैठकर वहाँ वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी"(मत्ती 12:43-45)।

यीशु हमें बताते हैं कि शत्रु किस प्रकार काम करता है। जब दुष्टात्मा अपने क्षेत्र से निकाल दी जाती है तब वह पुनः वापस आने का प्रयास करती है। इसीलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि द्वार बन्द रखे जाएं। उदाहरण के लिए, यदि आपने कभी अश्लीलता के लिए द्वार खोला था और बाद में पश्चात्ताप करके इस बन्धन को तोड़ दिया था, परन्तु द्वार बन्द रखने के बजाए आप थोड़े बहुत अश्लीलता में बने रहे तो यह सम्भावना है कि आप अन्त में पहले से अधिक मुसीबत में पड़ जाएंगे। यह इसलिए है कि शत्रु जब पुनः वापस आता है वह अधिक तीव्रता से आता है। जब आप बन्धनों को तोड़ते हैं तब शत्रु उन्हीं क्षेत्रों में आपके ऊपर आक्रमण करेगा जिनमें से आप ने उसे निकालने का निर्णय लिया है। इस शुद्धिकरण का प्रभाव तब तक रहेगा जब तक आप उसे पुनः प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते हैं, उन लगातार पापों के द्वारा जिन्हें आप करते हैं। हमें उन सभी द्वारों को स्थाई रूप से बन्द करना है जिनके द्वारा दुष्टात्माएं हमारे जीवनों में प्रवेश करती हैं।

अपने और अपने पूर्वजों के पापों का पश्चात्ताप् करना और उन्हें छोड़ना

"और तुम में से जो बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं के देश में अपने अधर्म के कारण गल जाएँगे; और अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों के कारण भी वे उन्हीं के समान गल जाएँगे। पर यदि वे अपने और अपने पितरों के अधर्म को मान लेंगे, अर्थात् उस विश्वासघात को जो वे मेरा करेंगे, और यह भी मान लेंगे कि हम यहोवा के विरुद्ध चले थे, इसी कारण वह हमारे विरुद्ध होकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है यदि उस उसमय उनका खतनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे; तब जो वाचा मैं ने याकूब के संग बाँधी थी उसको मैं स्मरण करूँगा और जो वाचा मैंने इसहाक से और जो वाचा मैंने अब्राहम से बाँधी थी उनको भी स्मरण करूँगा, और इस देश को भी मैं स्मरण करूँगा" (लैव्यव्यवस्था 26:39-42)।

यहाँ परमेश्वर अपने लोगों से कहता है कि वर्तमान पीढ़ी अपनी पूर्व की पीढ़ी के पापों के लिए पश्चात्ताप् कर सकती है। हम वचन में इस प्रकार के अन्य उदाहरण भी देखते हैं।

"हे यहोवा, हम अपनी दुष्टता और अपने पुरखाओं के अधर्म को भी मान लेते हैं, क्योंकि हमने तेरे विरुद्ध पाप किया है" (यिर्मयाह 14:20)।

एज्रा, नहेम्याह और दानिय्येल ने अपने पूर्वजों के पापों के लिए पश्चात्ताप् किया था। अतः यह वचन के अनुसार ठीक है कि हम अपने पूर्वजों के पापों के लिए पश्चात्ताप् करें।

परमेश्वर के द्वारा स्थापित अधिकार रचना

सामान्य संसार में परमेश्वर ने अधिकार को स्थापित किया है जिसका शैतान सम्मान करता है।

पति/पिता का अधिकार

"परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है" (1 कुरिन्थियों 11:3)।

पत्नि का सिर पति है। पति/पिता अपने परिवार का आत्मिक रखवाला अथवा द्वारपाल है। आत्मिक अधिकार की रेखा वही है जिसे परमेश्वर ने बनाया है। यह पति पर निर्भर है कि वह शत्रु के प्रभाव को अपने घर में अनुमति देता है अथवा नहीं। अपनी पत्नि और परिवार की सुरक्षा का अधिकार और जिम्मेदारी पति की है। पतियों को अपने अधि ाकार का स्थान ग्रहण करना है, शैतान के लिए द्वार बन्द करना है और दुष्टात्माओं की सारी ेशक्तियों के विरोधा में यह घोषणा करना है कि उन्हें उनकी पत्नियों और बच्चों को प्रभावित करने का अधिाकार नहीं है।

विश्वासी जीवनसाथी/माता-पिता का अधिकार

"क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है; और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे बाल-बच्चे अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र हैं" (1 कुरिन्थियों 7:14)।

इस प्रकार ऐसी स्थिति में जहाँ एक जीवन साथी अविश्वासी है, वहाँ दूसरा जीवनसाथी अविश्वासी जीवन साथी पर आत्मिक बातों में अपना अधिकार प्रयोग कर सकता है। यदि आप विश्वासी हैं, आप भिन्नता ला सकते हैं क्योंकि आपके अविश्वासी जीवन साथी के ऊपर आपके विश्वास का अधिकार है। यहाँ तक कि इस सम्बन्ध से उत्पन्न हुए बच्चों पर भी विश्वासी माता या पिता का आत्मिक प्रभाव रहता है।

वर्तमान पीढ़ी का अधिकार

चूँकि हम अपने परिवार वंश के वर्तमान प्रतिनिधि हैं, हमारा अधिकार उन सब मन्नतों, समर्पणों और समझौतों के ऊपर हैं जो पिछली पीढ़ियों में किए गए थे जिनका वर्णन लैव्यव्यवस्था 26:39-42 में किया गया है।

- हमारी स्वतन्त्रता क्रूस पर प्राप्त की गई है।
- यीशु लोगों के जीवनों में शैतान के प्रत्येक काम को नाश करने आया था।
- प्रभु यीशु का लहू हमें स्वतन्त्र करता है। बन्दीगृह के द्वार खुले खुले हुए हैं परन्तु आपको स्वतन्त्रा में प्रवेश करने हेतु बाहर निकलना चाहिए। हमें स्वतन्त्रता पूर्वक वहाँ से निकलना चाहिए।
- परमेश्वर ने हमें प्रत्येक स्वर्गीय आशीष से आशीषित किया है।
- हमें उन सभी द्वारों को स्थाई रूप से बन्द करना है जिनमें से शैतान आ सकता है।
- यह वचन के अनुसार ठीक है कि हम अपने पूर्वजों के पापों के लिए पश्चात्ताप् करें।
- सामान्य संसार में परमेश्वर के द्वारा स्थापित किया गया अधि कार है जिसका शैतान सम्मान करता है।

प्राय: पूछे जानेवाले प्रश्न

प्रश्न 1. जब मैं मसीह को व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता स्वीकार करता हूँ और यह मानता हूँ कि उसका लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। तब मैं क्यों अपने पूर्वजों के अधर्मो के वश में हूँ? क्या यीशु का लहू अधर्म को शुद्ध नहीं करता है? जब प्रभु ने हमें छुड़ाया है तो क्या यह छुटकारा सारे बन्धनों से छुटकारा नहीं है? क्यों हमें पीढ़ियों के बन्धनों के विषय में कदम उठाने की आवश्यकता है?

जब हम यीशु मसीह को व्यक्तिगत रुप से उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं, तब हमारी आत्मा में हम नया जन्म प्राप्त करके नई सृष्टि बन जाते हैं। मसीह का लहू हमारे पापों को धो डालता है। तौभी, समस्या यह है कि हमारे पूर्वजों के अधार्म ने जो द्वार शैतान के बन्धनों के लिए खोले थे, वे हमारे प्राण - मन, इच्छा और भावनाओं को, हमारे शरीर को और जीवन के अनुभवों को भी प्रभावित करते हैं। जब परमेश्वर हमें यीशु के लहू से धोकर शुद्ध करता है तब वह हमारे प्राण, शरीर और हमारी परिस्थितियों को नहीं बदलता है।

उदाहरण के लिए, जब आपने मसीह को ग्रहण किया था तब यदि आपके बाल सफेद हो रहे थे, तो यह सम्भावना है कि यीशु को ग्रहण करने के बाद भी वे लगातार सफेद होते जाएंगे। अथवा नया जन्म पाने से पूर्व आपकी लम्बाई 6 फुट की थी, तो यीशु को प्राप्त करने के बाद भी आपकी लम्बाई उतनी ही रहेगी। आप एक क्षण में अपनी आत्मा में नए प्राणी बन जाते हैं लेकिन बहुत से बन्धन जो आत्मा, शरीर और ख़्र जीवन की परिस्थितियों में हैं, वे लगातार बने रह सकते हैं

बहुत से विश्वासी हैं जो धोकर परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए गए हैं, लेकिन फिर भी अपने पापों की आदतों, भावनात्मक समस्याओं आदि में संघर्ष कर रहे हैं। अत: उनमें से एक वस्तु है जिससे हमें निपटना है और वह है पीढ़ियों का बन्धन।

प्रश्न 2. निर्गमन 20:5,6 के अनुसार परमेश्वर अधर्म का बदला उनसे लेता है जो उससे घष्टणा करते हैं और उन पर दया करता है जो उससे प्रेम करते हैं। मैं परमेश्वर से घृणा नहीं करता हूँ बल्कि मैं उससे प्रेम करता हूँ, तो हमें पारिवारिक बन्धनों को तोड़ने के लिए क्यों चिन्तित होना चाहिए?

इसका उत्तर पहले प्रश्न के समान ही है। हम अपने हृदय से परमेश्वर को प्रेम करते हैं परन्तु कई बार शत्रु के लिए हमारी आत्मा, देह और जीवन की परिस्थितियों में द्वार खुले रहते हैं, जिनमें परमेश्वर हमसे कहता है कि हम उन से निपटें। परमेश्वर ने नहीं कहा, "मैं तुम्हारे बदले में शैतान को झिड़कूँगा," बल्कि, उसने कहा, "तुम शैतान को झिड़को।"

प्रश्न 3. क्या मैं तब तक पीढ़ियों के लिए आशीष नहीं बन सकता जब तक कि मैं पीढ़ियों के बन्धनों को न तोड़ दूँ?

जब आप मसीह में आते हैं तो आप स्वतः ही इब्राहीम की आशीषों के और मसीह में आप जो कुछ हैं, उस वजह प्राप्त होने वाली आशीषों के भागीदार होते हैं, अतः आप अपनी आनेवाली पीढ़ियों के लिए आशीष के स्त्रोत है, यद्यपि आप अपनी पीढ़ियों के बन्धनों में हो सकते हैं जिनसे आपको छुटकारा पाना आवश्यक है। तौभी आपको अपनी पीढ़ी को प्रभावित करना इस बात पर बहुत निर्भर करता है कि आप जिस तरह का जीवन व्यतीत करते हैं, उसमें आप किस स्तर तक परमेश्वर के आज्ञाकारी है, यदि आप आलसी हैं और सोचते हैं, "मैं बचाया गया हूँ। मेरे पास जीवन बीमा है। यही मेरे लिए पर्याप्त है कि मैं स्वर्ग जाऊँगा," और जीवन में चलता रहूँगा, तब आप अपनी आनेवाली पीढ़ियों को आत्मिक रूप से प्रभावित नहीं कर सकेंगे। परन्तु आप ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रभु के पीछे चलते हैं और परमेष्ठवर के आत्मा और उसके वचन में परमेष्ठवर की बातों में ध्यान देते हैं, तब आप अपनी आनेवाली पीढ़ियों को अधिकता से प्रभावित कर सकेंगे।

प्रश्न 4. क्या मैं अपने पूरे परिवार के लिए खड़ा होकर परमेश्वर की क्षमा माँग सकता हूँ अथवा परिवार के सभी सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से ऐसा करना चाहिए?

परमेश्वर अधिकार के ढाँचे में काम करता है जिसे उसने स्थापित किया है। इस अधिकार के कारण आप अपने परिवार के सदस्यों के ऊपर कुछ स्तर तक प्रभाव डाल सकते हैं। परन्तु आपके द्वारा लिए गए आत्मिक ैसलों का प्रभाव आपकी आनेवाली पीढ़ी के सदस्यों पर पड़ेगा जो आपके प्रभाव के क्षेत्र में हैं। यदि यह उन परिवार के सदस्यों के बारे में है जो आपसे बड़े हैं अथवा आपके बराबर हैं, वे अपने फैसले स्वयं करेंगे, परन्तु आप प्रार्थनाओं के द्वारा उनके फैसलों को प्रभावित कर सकते हैं। चूँकि हम अपने परिवार की रेखा के प्रतिनिधि हैं, हमारा अधि कार उन सब मन्नतों, समर्पणों, समझौतों पर है जो पहले किए जा चुके हैं, और यदि हम इसमें कुछ बदलाव करते है तो यह बदलाव हमारे बाद आनेवाली पीढ़ियों पर जाएगा।

प्रश्न 5. क्या उस अधर्म के कारण/ उत्पत्ति को जानना/खोजना आवश्यक है जिसके कारण पीढ़ियों का बन्धन आता है?

लोगों ने जो गवाहियाँ दी हैं उनकें के आधाार पर जिन प्राय: मन्नतों और श्रापों का बहि:ज़्कार करना पारिवारिक बन्धानों को तोड़ने और और पूर्वजों के द्वारा ष्टैतान को दिए गए प्रवेष्ठा को रोकने के लिए पर्याप्त है। प्राय: वाचाओं और श्रापों का बहिष्कार करना पारिवारिक बन्धनों को तोड़ने के लिए है और पूर्वजों के द्वारा शैतान को दिए गए प्रवेश को रोकने के लिए पर्याप्त है। परन्तु कुछ दुर्लभ मामलों में, बन्धन लगातार बना रह सकता है और कुछ अधिक गहरा और कठोर हो सकता है। इसके लिए हमें इसकी जड़ तक जाकर विशेष कारण को ढूँढ़ने की आवश्यकता है कि यह परिवार में कैसे आया और किस पूर्वज ने पारिवारिक शाखा में शत्रु को प्रवेश करने की अनुमति दी, ताकि आप विशेष बातों को पलट सकें। प्राय: पवित्रात्मा इसका उत्तर प्रकट करता है अथवा हम किसी ऐसे व्यक्ति से जानकारी ले सकते हैं जो हमारे परिवार के इतिहास को जानता हो।

प्रश्न 6. क्या विश्वासियों पर श्राप का प्रभाव होता है?

सामान्य रूप से इसका उत्तर है, "नहीं। "निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता, और इस्राएल पर भावी कहना कोई अर्थ नहीं रखता" (गिनती 23:23)। तौभी शैतान उसी सीमा तक प्रवेश करेगा जितना हम उसे अनुमति देंगे। उदाहरण के लिए, जब एक विश्वासी किसी गलत शिक्षा में पड़ जाता है भय में जीवन जीता है अथवा अपने जीवन में शैतान को प्रवेश करने का मौंका देता है, तो इससे वह विश्वासी अपने जीवन को शैतान की कार्यविधि हेतु उपलब्ध कराता है। अत: विश्वासियों के लिए यह आवश्यक है कि वे परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलें।

प्रश्न 7. क्यों हमारा परमेश्वर जलन रखनेवाला परमेश्वर है?

जब आप वचन का विश्लेषण करते हैं तो प्राय: सभी समयों में हम परमेश्वर को यह घोषित करते हुए, पाते है कि वह एक जलन रखनेवाला परमेश्वर है–यह उस सन्दर्भ में है जहाँ लोग अन्य देवताओं अथवा झूठे देवताओं की उपासना करते हैं जब हम झूठे देवताओं की उपासना करते हैं, तब परमेश्वर जलन रखता है क्योंकि:

- इससे हमारे प्राथमिक उद्देश्य का उल्लंघन होता है, जो जीवित परमेश्वर की उपासना करने का है। हमें केवल उसी की उपासना करने के लिए रचा गया है। "क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला परमेश्वर है" (निर्गमन 34:14)।
- वह अपनी महिमा किसी दूसरे को नहीं देगा। "मैं यहोवा हूँ, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूँगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूँगा" (यशायाह 42:8)। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की महिमा किसी अन्य को देता है तो परमेश्वर इसे सहन नहीं करता है।

- हम परमेश्वर को गलत तरीके से प्रकट कर रहे हैं। इससे परमेश्वर की पहचान बदलती है कि वह वास्तव में कौन है–एक सृष्टिकर्त्ता है। "इसलिये तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूँ? उस पवित्र का यही वचन है" (यशायाह 40:25)। उदाहरण के लिए, यदि किसी को आपकी तस्वीर खींचनी हो, तब वह आपके सिर की जगह उसमें कोकरोच लगाकर कहे कि यह आप हैं तो क्या आप इसे पसन्द करेंगे? आप इसके विषय में प्रसन्न नहीं होंगे, परन्तु जलन होगी–जिसका अर्थ है कि आप क्रोधित होंगे कि उन्होंने ऐसा किया है। जब हम सृष्टिकर्त्ता की उपासना करने के बजाय सृष्टि की उपासना करते हैं, तब हम ऐसा ही करते हैं। बजाए इसके कि सृष्टिकर्त्ता की उपासना करते हैं। हम परमेश्वर को गलत तरीके से प्रकट करते हैं। इसलिए परमेश्वर जलन रखनेवाला परमेश्वर है।

प्रश्न 8. क्या मसीही मूर्तियाँ गलत हैं?

किसी भी प्रकार की मूर्ति अथवा प्रतिमा जो उपासना, मनन भक्ति की वस्तु बनती है–चाहे हम उसे कोई भी नाम क्यों न दें अथवा वह किसी का भी प्रतिनिधित्व क्यों न करती हो, चाहे वह मसीही आराधना के स्थान पर ही क्यों न रखी हो, गलत है।

हमें तथा कथित बालक यीशु, किशोर यीशु और जवान यीशु की तस्वीर, अथवा मूर्ति की उपासना और मोमबत्तियाँ नहीं जलानी चाहिए। आपको कैसे पता है कि वह यीशु की ही तस्वीर है? यह तस्वीर किसी और की भी हो सकती है और आप उस पर मोमबत्तियाँ जलाकर फूल चढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कहता है, "तू ऐसी कोई मूर्ति मत बनाना जो उड़ती और रेंगती हो...।"

किसी भी मूर्ति को "मसीही" कहना और उसके माध्यम से परमेश्वर की उपासना करना ठट्ठा उड़ाने के समान है। आप परमेश्वर की आराधना केवल "आत्मा और सच्चाई" से करते हैं (यूहन्ना 4:23,24)।

प्रश्न 9: मोमबत्तियाँ जलाने में क्या गलत है?

मोमबत्ती जलाना अपने आप में गलत नहीं है, केवल एक प्रतीक है। हम बहुत से अवसरों पर ऐसा करते हैं : जब बिजली चली जाती है तो प्रकाष्ठा के लिए मोमबत्ती जलाते हैं, जन्मदिन मनाने के अवसरों पर, वैवाहिक एकता को प्रकट करने के लिए तथा शुभ अवसरों आदि पर। तौभी यदि ऐसा किसी मूर्ति अथवा प्रतिमा की उपासना के लिए किया जाता है तब हम परमेश्वर की उपासना "सच्चाई और आत्मा" (यूहन्नाा 4:23,24) में करने के सत्य का उल्लघंन करते हैं। यदि आप सोचते हैं कि आपके मूर्ति के सामने मोमबत्ती जलाने से परमेश्वर को अच्छा लगेगा अथवा परमेश्वर आपकी प्रार्थना का उत्तर देगा क्योंकि आग की लौ आपकी प्रार्थना को स्वर्ग तक पहुँचाएगी, तब आप अपने आप को परेशानी में डाल रहे है। बाइबल परमेश्वर की उपासना आत्मा और सच्चाई से करने के लिए कहती है, न कि मोम और आग के साथ।

प्रश्न 10. मेरे घर में साथ रहने वाले/जीवनसाथी के पास मूर्तियाँ हैं। क्या इससे मुझ पर भी प्रभाव पड़ सकता है?

नहीं। बाइबल कहती है कि हम ऐसे संसार में रहते हैं जो दुष्ट के वश में है (1 यूहन्ना 5:18,19)। हम जहाँ कहीं भी जाते हैं वहाँ शैतान (दुष्टात्माओं) की उपस्थिति हमारे चारों ओर रहती है, परन्तु हम उन्हें देख नहीं सकते हैं। अत: ऐसे घर में रहना जहाँ आपके साथ रहने वाले व्यक्ति/जीवनसाथी के पास मूर्तियाँ रहने से आपको तब तक कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा जब तक कि आप उस वचन से अपनी रक्षा करते हैं जो परमेश्वर ने आपको दिया है। अत: आपको डरने की आवश्यकता नहीं। अपने आप को शुद्ध रखें, अपने रहने के स्थान को साफ रखें और आप ठीक रहेंगे। दुष्ट उसे स्पर्श नहीं कर सकता है जो परमेश्वर से जन्मा है। भय और मूर्तिपूजा करने के द्वारा शैतान को अपने जीवन में प्रवेश करने का अवसर न दें। स्मरण रखें कि बड़ा आपमें रहता है (1 यूहन्ना 4:4)।

प्रश्न 11. क्या यह (पीढ़ियों का बन्धन) परमेश्वर की ओर से है अथवा यह शैतान का काम है?

यह समझें कि पूर्वजों के द्वारा किए गए पापों, मन्नतों और समर्पणों ख्रद्वार खोले हैं। सम्पूर्ण बाइबल में कुछ ऐसे पद है जैसे "वह कुछ" करता है अथवा "बीमारी को भेजेगा", बहरा और गूंगा करेगा अथवा दुष्टात्मा भेजेगा।" परन्तु सम्पूर्ण धर्मशास्त्र का अध्ययन करने के बाद इसका सही अर्थ यह है कि परमेश्वर ये सब कुछ स्वयं नहीं करता है। यह शैतान का काम है। परमेश्वर का एक प्रबन्ध है जिसके द्वारा वह प्रत्येक मनुष्य को सुरक्षित रखता है। यीशु ने कहा कि परमेश्वर अपना सूर्य भले और बुरे दोनों पर चमकाता है, और पानी भले और बुरे दोनों पर बरसाता है। तौभी जब एक व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा अथवा नियम का उल्लघंन करता है, तब वह जानबूझकर एक ऐसे क्षेत्र में चला जाता है जहाँ शैतान उसे हानि, नुकसान और विनाश की ओर ले जाता है। आप इस परिस्थिति के लिए परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते हैं। एक मनुष्य के कामों के परिणाम ही उसे परमेश्वर के प्रबन्ध की सुरक्षा से बाहर ले जाने के लिए जिम्मेदार हैं। इस प्रकार वह शैतान के प्रभाव, राज्य और दबाव को अपने जीवन में अनुमति देता है। परमेश्वर लोगों को अपने फैसले करने और अपनी इच्छा पूरी करने की अनुमति देता है। सामान्यत: लोग उस मार्ग का चुनाव करते हैं जहाँ शैतान उन्हें बन्धन में रख देता है। परमेश्वर ने अपनी पहचान यह कह कर प्रकट की है, "मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला परमेश्वर हूँ।" उसने कहीं भी ऐसा नहीं कहा है, "मैं तुम्हारा परमेश्वर बीमार करनेवाला हूँ।" आज की भाषा में इसे इस प्रकार कह सकते हैं : वह आपका "डाक्टर" है।

सरल शब्दों में, जब आप बीमार होते हैं तो क्या आप डाक्टर के पास यह कहते हुए जाते हैं, "डाक्टर। यदि आज आपकी पवित्र इच्छा है, यदि आज आप लोगों को चंगा करने के मूड में हैं यदि आप आनन्दित है, तो कृपया पता कीजिए कि मेरे अन्दर क्या कमी है और मुझे ठीक करने के लिए कुछ कीजिए?" जब हम डॉक्टर के पास जाते हैं तब हमारी स्पज़्ट आष्ठाा होती है कि वह अपनी योग्यता और ज्ञान के अनुसार, सब कुछ करे ताकि हमें ठीक कर सके न कि और अधिक बीमार करे। परन्तु उस परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों में दोहरा

मापदण्ड होता है जिसने कहा, "मैं यहोवा राफा (तुम्हारा चंगा करनेवाला, तुम्हारा डाक्टर), यहोवा यिरै (उपाय करने वाला), यहोवा निस्सी (जो तुम्हें विजय देता है), तुम्हारा रक्षक, तुम्हारी धार्मिकता" हूँ और उससे कहें कि "वह आपको चंगा करें। यदि आपकी पवित्र इच्छा है तो मुझे चंगा कर।" चंगा करने और आशीष देने की परमेश्वर की इच्छा है। जब हम डाक्टर से इस तरह बात नहीं करते, तो प्रभु से ऐसे क्यों बात करते हैं? एक और सामान्य उदाहरण है कि परमेश्वर सभी लोगों को स्वर्ग में आने का निमन्त्रण देताा है, न कि नरक में, फिर भी लोग स्वर्ग का नहीं बल्कि नरक का चुनाव करते हैं। परमेश्वर उन्हें वहाँ नहीं भेजता है और इस बात के लिए उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। अत: अत: परमेश्वर पीढ़ियों का बन्धन नहीं लाता है। यह शैतान का काम है, जो हमारे अपने पापमय कामों का परिणाम है।

तैयारी

- उपासना की वस्तुओं को हटा दें जो उपासना के लिए प्रयोग की गई थी या की जा रही है। जब सन्देह हो तो उन्हें हटा दे।
- किसी भी प्रकार की गलत शिक्षाओं–हिनोसिस, जादू टोना, नक्षत्र विद्याा, राशिफल, मस्तिष्क अध्ययन, संख्याओं का जोड़ घटाना, हस्तरेरखा, ताबीज, मन्त्रविद्याा, जन्म के पत्थर, शुभ सांकेतिक चिन्हे,– आदि को बहिष्कार करें जो अभक्ति को बढ़ावा देते हैं।
- झूठे धर्मो (यहोवा विटनेस, फ्रीमसनरी), विचार, झूठे देवताओं को उपासना और तत्वज्ञान जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध है, संलग्न होने से बचें।
- यीशु ने जो कुछ क्रूस पर पूरा किया है उस पर विश्वास करें, चाहे आपके पूर्वजों ने जो कुछ भी किया हौ। आप मसीह के प्रति जुड़े रहने की प्रतिज्ञा करें।
- परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण आज्ञाकारिता के प्रति समर्पित बनें।
- यदि आप आशीषित होना चाहते हैं तो परमेश्वर को अपने दसमांश और दान दें। उसके वचन का पालन करें और पवित्र जीवन जीएं।
- पवित्रात्मा से कहे कि वह आपको वे बातें दिखाए जहाँ आप और आपके पूर्वज बन्धन में थे, उनको लिख ले और उन बन्धनों को तोड़ने के लिए निम्नलिखित प्रार्थना करें।

प्रार्थना

प्रभु यीशु, मैं विश्वास करता हूँ कि आप मेरे लिए क्रूस पर मारे गए। क्रूस पर आपने अपना लहू बहाया ताकि मैं शैतान की प्रत्येक शक्ति से स्वतन्त्र हो सकूँ। आपका लहू मुझे व्यर्थ के जीवन और जीवन पद्यति से स्वतन्त्र करने के लिए बहाया गया था। जो मुझे मेरे पूर्वजों ने विरासत में दिया था। आज मैं, उस काम के कारण जो आपने मेरे लिए किया, पूर्ण स्वतन्त्रता का दावा करता हूँ।

मैं अपने जीवन के प्रत्येक पाप और विद्रोह के लिए पश्चात्ताप करके छोड़ता हूँ। मैं अपने पापों और विद्रोह के परिणामों से स्वतन्त्रता स्वीकार करता हूँ।

मैं अपने पूर्वजों के जीवनों के पापों और विद्रोहों के लिए पश्चात्ताप् करता हूँ और उन्हें त्यागता हूँ। मैं पाप और विद्रोह के परिणामों से अपने स्वतन्त्रता स्वीकार करता हूँ।

यीशु मसीह के नाम और उसके लहू की सामर्थ में, मैं प्रत्येक बन्ध न और श्राप के ऊपर अधिकार लेता हूँ जो मुझे मेरे पूर्वजों के द्वारा दिया गया है। मैं प्रत्येक बन्धन को तोड़ता और प्रत्येक श्राप और इसके प्रभाव को निरस्त करता हूँ।

मैं सारी वाचाओं, श्रापों, समर्पणों, पापमय कर्मों, भय, समझौतों, उन अधिकारों को, जिन्होंने मेरे पिता अथवा मेरी माता की पारिवारिक रेखा अथवा अन्य लोगों के द्वारा अथवा अपने आप घोषित श्रापों के द्वारा शैतान के लिए द्वार खोला था, निरस्त करता हूँ।

यीशु के नाम में और मसीह के लहू की सामर्थ के द्वारा मैं शत्रु की प्रत्येक सामर्थ और प्रभाव को तोड़ता हूँ जिसने मेरे जीवन को प्रभावित किया है।

मैं स्वतन्त्र हूँ, क्योंकि यीशु ने मुझे स्वतन्त्र किया है!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

Bible College

& MINISTRY TRAINING CENTRE

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

नोट्स

कुछ समस्याऐं जिनका लोग सामना कर रहे हैं उनकी उत्पत्ति पिछली पीढ़ियों में हो सकती है। इनमें से कुछ समस्याऐं किसी के कारण हो सकती है जो पिछली पीढ़ी में हो और उसने पापमय जीवन जीया हो अथवा दुष्टात्माओं के कामों में लगा रहा हो। हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि पीढ़ियों के बन्धन क्या हैं और इन्हें कैसे तोड़ा जाए। हमारी स्वतन्त्रता क्रूस पर प्राप्त की जा चुकी है। यीशु शैतान के प्रत्येक काम को नाश करने के लिए आया चाहे यह किसी भी प्रकार से हमारे जीवनों में प्रवेश क्यों न किया हो।

यह पुस्तिका हमारी सहायता करेगी कि हम व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को पहचाने और उन्हें तोड़े और स्वतन्त्र हो जाए! बहुतायत का जीवन जीए जिसे यीश हमें देने आया!

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org